



शिक्षा मंत्रालय
Ministry of
Education

Issue No.

2

भारत सरकार
Government of India



उन्नत भारत अभियान
Unnat Bharat Abhiyan

उन्नत भारत अभियान

उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम

राष्ट्रीय समन्वयक संस्थान- आई.आई.टी. दिल्ली

सफलता की कहानियां:

- फूलों के कचरे से बनाए कई कीमती उत्पाद।
- स्पिरुलिना बायोमास की लाभदायक खेती।
- मछुआरों के बीच नई तकनीक का सफल प्रयोग।
- समग्र विकास की अनूठी पहल।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां:

- बेकरी उत्पाद बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- विकसित भारत @ 2047 के लिए गांधीवादी रास्ते पर संवाद का आयोजन।
- बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला।
- यमुना नदी की सफाई और कायाकल्प पर समीक्षा हेतु कार्यशाला।
- उन्नत भारत अभियान ने ग्रामीणों के साथ देश भर में मनाया गणतंत्र दिवस समारोह।
- नए कोर्स के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ।

आगामी कार्यक्रम

1. गोवा यूनिवर्सिटी में UGC FDP प्रोग्राम (2-7 फरवरी)
2. SEG 'टेक्निकल और उच्च शिक्षा संस्थानों में नैतिकता' IIT बॉम्बे द्वारा 1-दिवसीय वर्कशॉप। विषय - NEP 2020 का क्रियान्वयन: उन्नत भारत अभियान के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा का एकीकरण- (24 फरवरी)
3. SEG-सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली द्वारा प्राकृतिक खेती पर किसान सम्मेलन। (5 फरवरी)

अभियान

उन्नत भारत अभियान ने ग्रामीण विकास की दिशा में प्रोग्राम और एक्टिविटी करने के लिए एक मज़बूत प्लेटफॉर्म दिया है। SEG प्रोजेक्ट ग्रामीण विकास का कार्य करने में पर्याप्त ज्ञान और अनुभव देते हैं।

- एस. रेगूपथी

पी.आई. कोऑर्डिनेटर, उन्नत भारत अभियान
डी.एम.आई. इंजीनियरिंग कॉलेज, कन्याकुमारी, तमिलनाडु

एक रीबनल कोऑर्डिनेटिंग इंस्टीट्यूट के तौर पर, उन्नत भारत अभियान के साथ हमारी यात्रा प्रेरणादायक और सार्थक रही है। हमने देखा है कि जब एकेडमिक संस्थान ग्रामीण समुदायों से जुड़ते हैं, तो वे कैसे असली बदलाव ला सकते हैं।

-डॉ.सोनाली क्षीरसागर

आरसीआई कोऑर्डिनेटर, उन्नत भारत अभियान
डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय
छतपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र

सफलता की कहानियां

फूलों के कचरे से बनाए कई कीमती उत्पाद।



पीआई: एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, कट्टनकुलथुर, तमिलनाडु। समन्वयक: डॉ. वी. तिरुमुरुगन; परियोजना अन्वेषक: डॉ. एस. विशाली, एसईजी: स्वच्छता और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

मंदिरों और धार्मिक कार्यक्रमों से रोजाना जो फूलों का कचरा निकलता है, उसकी बड़ी मात्रा अक्सर पानी के स्रोतों या लैंडफिल में फेंक दी जाती है। इस प्रोजेक्ट में फेंके गए फूलों को अगरबत्ती, धूप और साबुन में बदलने के लिए एक आसान, कम लागत वाला और क्लोज्ड-लूप मॉडल पेश किया गया। इसके बाद बचे हुए बायोमास को एरोबिक और एनारोबिक कम्पोस्टिंग तरीकों का इस्तेमाल करके ऑर्गेनिक खाद में बदल दिया जाता है। इस तरीके में बहुत कम टेक्नोलॉजी की ज़रूरत थी और इसे स्थानीय रूप से उपलब्ध सामान की मदद से तैयार किया गया।

इस प्रोजेक्ट के लिए कालेज के फैकल्टी सदस्यों और छात्रों ने महिला स्वयं सहायता समूहों के साथ मिलकर काम किया। उन्हें कचरा इकट्ठा करने, अलग करने, प्रोडक्ट बनाने और कम्पोस्ट बनाने की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई। प्रोजेक्ट के दौरान

500 किलोग्राम से ज्यादा फूलों के कचरे को गलत तरीके से फेंके जाने से बचाया गया। इस पहल से 20 से ज्यादा ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार के मौके पैदा हुए, पर्यावरण के बारे में जागरूकता बढ़ी और सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल को बढ़ावा मिला।

स्पिरुलिना बायोमास की लाभदायक खेती।



पीआई: विष्णु इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, मेडक, नसरपुर, तेलंगाना, समन्वयक: प्रो. के. वनिता, एसईजी: अन्य

यह एक ऐसा प्रोजेक्ट है जिसमें कम इस्तेमाल होने वाली ज़मीन और कुपोषण की दोहरी चुनौतियों से लड़ने का रास्ता दिखाया गया है और यह रास्ता है स्पिरुलिना की खेती का जो प्रोटीन का बहुत अच्छा स्रोत होता है।

कालेज की फैकल्टी और छात्रों ने चुने हुए ग्रामीण परिवारों और SHG सदस्यों को स्पिरुलिना उत्पादन, कटाई और वैल्यू-एडेड औषधीय उत्पाद बनाने की ट्रेनिंग दी। स्पिरुलिना उगाने की यूनिट्स लगाई गईं, और प्रैक्टिकल ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाए गए। इस पूरे कार्यक्रम की स्टेनेबिलिटी सुनिश्चित करने के लिए संस्थान के ज़रिए फाइनेंशियल और मार्केटिंग लिंकेज की सुविधा भी दी गई। इस खेती के कारण संबंधित परिवारों की औसत

आय में 10-20% की वृद्धि हुई है। लेकिन इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि ग्रामीणों ने अपने और विशेष रूप से बच्चों के आहार में स्पिरलिना को शामिल कर लिया। चूंकि स्पिरलिना पोषक तत्वों से भरपूर एक “सुपरफूड” है। इसलिए गांवों से कुपोषण दूर करने में भी मदद मिली है।

मछुआरों के बीच नई तकनीक का सफल प्रयोग।



पीआई: कॉलेज ऑफ फिशरीज इंजीनियरिंग, नागपट्टिनम, तमिलनाडु, कुल गांव: 5, कार्य करने वाले छात्र: 120, लाभार्थी: ~600 परिवार, काम: जारी

तमिलनाडु स्थित नागपट्टिनम के आस-पास मछली पालन आजीविका का एक पारंपरिक साधन रहा है। किंतु पिछले कई वर्षों से पानी की गुणवत्ता खराब होने, मछली निकालने के बाद होने वाली बर्बादी और सीमित टेक्नोलॉजी के कारण मछुआरों में निराशा बढ़ रही थी। इस समस्या का समाधान करने के लिए उन्नत भारत अभियान की ओर से कॉलेज ऑफ फिशरीज इंजीनियरिंग ने पाँच गांवों में एक सघन अभियान चलाया।

कालेज की फैकल्टी के नेतृत्व में छात्रों ने गांव वालों के साथ मिलकर मछली पालन की समस्याओं का व्यवहारिक और वैज्ञानिक समाधान ढूँढा गया। छोटे आकार के पानी की टेस्टिंग डिवाइस, खाने योग्य पैकेजिंग, हाइब्रिड सोलर ड्रायर और मछली बेचने वाली मोबाइल ट्रॉलियों के जरिए समस्या के हर

पहलू पर काम किया गया जिससे तालाब प्रबंधन, वैल्यू एडिशन और महिलाओं के नेतृत्व वाली आजीविका मज़बूत हुई। 10 से ज्यादा ट्रेनिंग प्रोग्राम हर गाँव में किए गए जिससे 600 परिवारों को बेहतर पैदावार, कम नुकसान और ज्यादा आय का फायदा हुआ। यह पहल एक स्केलेबल मॉडल के रूप में विकसित हुई है। इस प्रयोग में विज्ञान ने पारंपरिक तरीकों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए शानदार परिणाम दिया है।

समग्र विकास की अनूठी पहल।



पीआई: PSG कॉलेज ऑफ़ फार्मेसी, कोयंबटूर, तमिलनाडु | कुल गाँव: 5, छात्र: 150 | लाभार्थी: 80+ मरीज़ और 10 SHG | काम: जारी

कोयंबटूर के आस-पास के ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में, PSG कॉलेज ऑफ़ फार्मेसी के उन्नत भारत अभियान सेल ने पाँच नेटवर्क गाँवों को चुनकर वहां एक इंटीग्रेटेड अप्रोच के साथ हेल्थकेयर, आजीविका और शिक्षा पर काम किया है। इसके लिए स्थानीय एन.जी.ओ. और सी.एस.आर. की भी मदद ली गई। हेल्थ कैंप का लाभ 80 मरीज़ों को हुआ, जिससे उनकी देखभाल की स्थिति बेहतर हुई। आजीविका के क्षेत्र में काम करते हुए 10 महिला स्वयं सहायता समूहों को बाजरा-आधारित कुकी बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे आय के अवसर पैदा हुए और पोषण की स्थिति अच्छी हो गई। शैक्षिक हस्तक्षेपों के अंतर्गत तीन गाँवों के स्कूलों को अपग्रेड किया गया और 15 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। 150 छात्रों की मदद से

चलाए गए इस कार्यक्रम ने अकादमिक शिक्षा को सामाजिक ज़िम्मेदारी से जोड़कर एक शानदार उदाहरण पेश किया है। इससे यह भी साबित हुआ कि स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका में समन्वित प्रगति से ग्रामीण विकास को एक ठोस आधार प्रदान किया जा सकता है।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां

बेकरी उत्पाद बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।



तमिलनाडु के एक आकांक्षी जिले रामनाथपुरम में उन्नत भारत अभियान के तहत, प्रो. के. रविचंद्रन के नेतृत्व में मोहम्मद साथक इंजीनियरिंग कॉलेज की UBA टीम ने 9 से 13 जनवरी 2026 तक बेकरी में तीन एंटरप्रेन्योरशिप और स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किए जिसमें समाज के विविध वर्गों से युवा उद्यमियों ने हिस्सा लिया।

NLC तमिलनाडु पावर लिमिटेड की CSR पहल के रूप में लागू किए गए इन प्रोग्रामों का मकसद हैंड्स-ऑन बेकरी ट्रेनिंग और एंटरप्रेन्योरशिप ओरिएंटेशन के ज़रिए ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के बीच स्वरोजगार को बढ़ावा देना था। प्रशिक्षण के दौरान ही प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक छोटे उद्यम शुरू किए,

और ट्रेनीज़ ने स्थायी आय अर्जित की। यह पहल समावेशी ग्रामीण आजीविका और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में CSR के साथ शैक्षणिक संस्थानों की सफल भागीदारी को भी उजागर करती है।

विकसित भारत @ 2047 के लिए गांधीवादी रास्ते पर संवाद का आयोजन।



उन्नत भारत अभियान के SEG- 'ग्रामीण आजीविका' के तहत 9 दिसंबर 2025 को ऑनलाइन माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ संवाद का आयोजन किया गया। इस संवाद में वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों और हरित ग्रामीण आजीविका को आगे बढ़ाने में उच्च शिक्षा संस्थानों को बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है।

गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित इस संवाद में नई शिक्षा नीति 2020 और विकसित भारत @ 2047 के बीच कई मायनों में बुनियादी एकता देखी गई और कहा गया कि इनके बीच तालमेल बिठाते हुए काम किया जा सकता है। गांवों में सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए वक्ताओं ने ज्ञान, शासन और सामुदायिक पहल को एकीकृत करने पर जोर दिया। उन्होंने इसके लिए एक स्केलेबल नीतिगत

रास्ता भी पेश किया। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों से युक्त इस महत्वपूर्ण संवाद में जलवायु-स्मार्ट खेती के तरीकों, महिलाएं केंद्रित आजीविका मॉडल और ग्रामीण उद्यमिता पर विशेष रूप से बातचीत की गई। संवाद में शामिल सभी वक्ता इस बात पर सहमत थे कि UBA-SEG ढांचे के तहत साक्ष्य-आधारित, स्थानीय रूप से प्रासंगिक और स्केलेबल उपायों पर जोर दिया जाना चाहिए।

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला।



21 जनवरी 2026 को बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झांसी में उन्नत भारत अभियान के तहत, उत्तर प्रदेश गौ सेवा आयोग के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित की गई। उप कुलपति प्रो. मुकेश पांडे की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य, शिक्षा और ग्रामीण कल्याण में उन्नत भारत अभियान के कार्यों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि प्रो. विरेन्द्र कुमार विजय ने कौशल विकास और स्थायी कृषि के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के लिए उन्नत भारत अभियान की उपलब्धियों और विज़न के बारे में बताया। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश गोसेवा आयोग के अध्यक्ष श्री श्यामबिहारी गुप्ता ने भी अपनी बात रखी और कहा कि गौआधारित कृषि ही भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। कार्यशाला के विशेषज्ञ सतों

में प्राकृतिक खेती, ऊर्जा, जल संरक्षण और आजीविका पर चर्चा की गई। कार्यशाला के अंत में कई किसानों और महिला प्रतिनिधियों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

यमुना नदी की सफाई और कायाकल्प पर समीक्षा हेतु कार्यशाला।



आई.आई.टी. दिल्ली (RCI) की ओर से 17 जनवरी 2026 को यमुना नदी की सफाई और कायाकल्प पर एक समीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें यमुना नदी को फिर से बेहतर बनाने की सामूहिक प्रतिबद्धता को पूरे संकल्प के साथ दोहराया गया। बातचीत और कार्रवाई के लिए कार्यशाला ने प्रतिभागियों को एक मज़बूत मंच प्रदान किया। प्रो. चेतन सिंह सोलंकी ने एक ज्ञानवर्धक और प्रेरक वक्तव्य दिया, जबकि मुख्य अतिथि श्री गोपाल आर्य जी ने अपने उत्साहवर्धक भाषण से प्रतिभागियों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन प्रो. पूजा घोष, RCI कोऑर्डिनेटर, UBA (दिल्ली NCR), और प्रो. वी. के. विजय, नेशनल कोऑर्डिनेटर, UBA ने किया। प्रो. अरविंद के. नेमा के लगातार प्रोत्साहन ने प्रतिभागियों को और भी ज़्यादा ऊर्जावान बनाया। कार्यशाला का समापन यमुना नदी की सफाई और कायाकल्प के प्रति नए उत्साह और कार्रवाई

योग्य संकल्प के साथ हुआ। सभी उपस्थित लोगों की सक्रिय भागीदारी ने इस कार्यक्रम को सार्थक बनाया और इस बात की संभावना को मजबूती प्रदान की कि यमुना नदी को शीघ्र ही उसकी वर्तमान दुर्दशा से बाहर निकालने के लिए शीघ्र ही ठोस कार्यवाही की जाएगी।

उन्नत भारत अभियान ने ग्रामीणों के साथ देश भर में मनाया गणतंत्र दिवस समारोह।



77वें गणतंत्र दिवस के मौके पर, उन्नत भारत अभियान के तहत रीजनल कोऑर्डिनेटिंग संस्थानों (RCIs) और प्रतिभागी संस्थानों (PIs) ने अपने नेटवर्क गांवों में लोगों के साथ मिलकर राष्ट्र निर्माण की भावना का पूरे हर्ष और उल्लास के साथ उत्सव मनाया। इस दौरान देश के हजारों गांवों में विविध प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गईं जैसे- ग्राम सभा में हिस्सा लेना, गणतंत्र दिवस मार्च और सफाई अभियान आदि। इस सब में छात्रों, फैकल्टी, गांव के प्रतिनिधियों और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी रही।

गणतंत्र दिवस जैसे अवसर पर आयोजित इन गतिविधियों के परिणाम स्वरूप उच्च शिक्षा संस्थानों और ग्रामीण इलाकों के बीच संबंधों को मजबूती मिलती है। इसके द्वारा नागरिक जिम्मेदारी, स्वच्छता और भागीदारी वाली शासन व्यवस्था को

भी बढ़ावा मिलता है। सभी स्टेकहोर्ल्स जब एक साथ आते हैं तो उनके सामूहिक उत्साह और सहयोग से राष्ट्रीय मूल्यों पर सबकी आस्था और प्रगाढ़ होती है। इस सबके बीच समावेशी और सर्वहितकारी विकास को बढ़ावा देने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका पर भी सबका ध्यान जाता है।

UGC MOOC कोर्स में पंजीकरण प्रारंभ।

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), आगरा को उन्नत भारत अभियान में RCI का दर्जा प्राप्त है। यह संस्थान UGC MOOC कोर्स के तत्वावधान में “कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी” विषय के अंतर्गत SWAYAM प्लेटफॉर्म पर 19 फरवरी 2026 से पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर रहा है। यह कोर्स उन्नत भारत अभियान की भावना के साथ-साथ विद्यार्थियों के एकेडमिक और व्यवहारिक पक्ष को भी मजबूत करता है। पंजीकरण 28 फरवरी 2026 को खत्म होगा। कोर्स लिंक के लिए क्लिक करें: https://onlinecourses.swayam2.ac.in/ugc26_ge01/preview

॥ धन्यवाद ॥

राष्ट्रीय समन्वयक कार्यालय, उन्नत भारत अभियान द्वारा संकलित
-विनम्र निवेदन-

किसी भी सुझाव या फीडबैक के लिए कृपया हमें लिखें
उन्नत भारत अभियान

ब्लाक-V-405, आई.आई.टी. दिल्ली कैम्पस
हैजखास, नई दिल्ली- 110016

unnatbharatabhiyaniitd@gmail.com,
unnatbharat@admin.iitd.ac.in
<https://unnatbharatabhiyan.gov.in/>